B. A. Part - 3, PAPER - 5 [SOCIAL PSYCHOLOGY]

Topic :→ PROPAGANDA [Definition & Meaning]. or (MAJOR TOOLS)
Session (2022-25)

प्रश्न :→ प्रचार से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। आधुनिक युग में किन-किन साधनों द्वारा प्रचार आयोजित किया जाता है।

अथवा प्रचार की परिभाषा दीजिए? औद्योगिक समाज में प्रचार के कौन-कौन से साधन हैं।

[What do you understand by Propaganda. Discuss its characteristics. Which of the means of Propaganda are used in Modern times.

(Or) Define Propaganda. What are the major tools of Propaganda in Industrial Society].

Answer :→ आधुनिक समाज में प्रचार के साधन को विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के हेतु अत्यधिक प्रयोग में लाया जाता है। इसका कारण यह है आधुनिक समाज अत्यन्त विस्तृत व जटिल होता है और साथ ही एक चीज के अनेक विकल्प (alternatives) भी होते हैं। उदाहरणार्थ, चाय, कपड़ा, सिगरेट या घड़ी को ही लीजिए। इसमें से प्रत्येक के अनेक प्रकार बाजार में उपलब्ध हैं। अतः प्रत्येक उत्पादक (Producer) प्रचार की सहायता लेता है जिससे कि वह अपनी चीज को अधिक से अधिक बेच सके। प्रचार करने के लिए प्रचार-कर्ता सिनेमा, रेडियो, भाषण, समाचार-पत्र व पत्रिकाओं की मदद ले सकता है ये सब प्रचार के साधन हैं। पर प्रचार के इन साधनों के विषय में विवेचना करने से पूर्व प्रचार के वास्तविक अर्थ को समझ लेना आवश्यक होगा।

'प्रचार' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी शब्द 'Propaganda' के लिए किया जाता है जो कि स्वयं लैटिन शब्द 'Propagare' से निकला है जिसका कि अर्थ है जान-बूझकर किसी वस्तु की उत्पत्ति अथवा विकास करना। इस शाब्दिक अर्थ से यह स्पष्ट है कि प्रचार वह प्रयत्न है जो कि हम किसी वस्तु या विचार को फैलाने के लिए जान-बूझकर करते हैं। प्रचार में खास बात है कि इसमें कोई काम स्वाभाविक या आपसे आप नहीं होता है। यह तो जान-बूझकर और दबाव डालते हुए ही किया जाता है। और भी स्पष्ट रूप में हम यह कह सकते हैं कि प्रचार वह सचेत प्रयत्न है जिसके द्वारा

① प्रेस, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ आदि (Press, Newspaper, Magazine etc): → प्रेस प्रचार का सबसे प्रमुख साधन है। प्रेस समाचार-पत्र, पत्रिका, विज्ञापन-पत्र, इश्तहार, पुस्तक आदि छपी हुई वस्तुओं को प्रकाशित करता है जो कि प्रचार कर्त्ता के सुझाव को नाना ढंग से लोगों में फैलता है। सर्वप्रथम समाचार पत्र व पत्रिकाओं को ही देखें। इनमें विज्ञापन कार्टून, लेख, समालोचना, सम्पादकीय आदि के माध्यम से असंख्य प्रकार की चीजों, विचारों, सिद्धान्तों आदि का प्रचार किया जाता है। इनमें कोई प्रचार कर्त्ता तो चित्रों को छापता है, कोई प्रतीकों को, तो कोई विख्यात अभिनेता, अभिनेत्री या नेता के कथनों को प्रस्तुत करता है और लोगों को अपनी ओर आकर्षित करके उन्हें प्रभावित करना चाहता है। उसी प्रकार समाचार पत्रों के माध्यम से राजनैतिक विचारों का विशेषकर चुनाव-सम्बन्धी प्रचार किया जाता है। उसी प्रकार प्रेस से बड़े-बड़े इश्तहारों (Posters) को छपवाकर प्रचार की विषय वस्तु को नाना ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। सिनेमा तथा चुनाव सम्बन्धी इश्तहार इसके अच्छे उदाहरण हैं। उसी भाँति विज्ञापन-पत्र (Handbills) को भी छपवाकर लोगों में बाँटकर प्रचार-कार्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विचारों, धार्मिक भावनाओं तथा सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए पुस्तकों को भी प्रेस से छपवाकर लोगों में फैलाया जा सकता है। राजनैतिक तथा धार्मिक विचारों व सिद्धान्तों को स्थायी रूप में लोगों के दिल में बैठा देने के साधन के रूप में पुस्तकों के महत्व को सभी लोग स्वीकार करते हैं।

② चलचित्र या सिनेमा (Motion Picture): → आधुनिक औद्योगिक समाजों में प्रचार का एक प्रभावपूर्ण साधन है चलचित्र या सिनेमा। कहा जाता है कि कुछ मानों में समाचार-पत्र, पत्रिका, पुस्तक आदि की तुलना में चलचित्र एक अधिक प्रभावपूर्ण साधन है। इसके दो प्रमुख कारण हैं:- एक तो यह है कि चलचित्र में व्यक्ति प्रचार की विषय-वस्तु को देखता और उसके बारे में सुनता भी है। अर्थात् आँख और कान इन दो प्रमुख इन्द्रियों के माध्यम से व्यक्ति के दिल व दिमाग दोनों को एक साथ प्रभावित करना है सम्भव होता है। दूसरा यह है कि जहाँ समाचार-पत्र आदि का प्रभाव केवल शिक्षित जनता तक ही सीमित है, वहाँ चलचित्र शिक्षित व अशिक्षित

दोनों को ही प्रभावित कर सकता है। चलचित्र के माध्यम से प्रचारकर्त्ता सुझाव को किसी प्रख्यात नेता, अभिनेता या अभिनेत्री के द्वारा प्रस्तुत करवाते हैं ताकि वह अधिक प्रभावशाली हो। उसी प्रकार छोटे-छोटे खेल या नाटक, कार्टून आदि दिखाकर भी चलचित्र के माध्यम से प्रचार किया जा सकता है। सरकार की ओर से 'न्यूज रील' के रूप में जो चलचित्र दिखाया जाता है उसका भी उद्देश्य सरकार की नीतियों तथा योजनाओं का प्रचार करना होता है।

(3) रेडियो और टेलीविजन (Radio and Television) :- प्रचार के साधन के रूप में रेडियो तथा टेलीविजन के महत्त्व को सभी लोग स्वीकार करते हैं। ये भी चलचित्र की भाँति शिक्षित व अशिक्षित दोनों पर ही अपना प्रभाव डालते हैं और टेलीविजन तो बिल्कुल ही सिनेमा की भाँति विषय-वस्तु को टेलीविजन के पर्दे पर दिखावा (visiable) भी देता है। पर चलचित्र से भी रेडियो व टेलीविजन इस अर्थ में अधिक प्रभावपूर्ण है कि इनके द्वारा पल भर में ही किसी वस्तु या विचार का प्रचार सम्पूर्ण विश्व में किया जा सकता है। संसार के अनेक टेलीविजन तथा रेडियो स्टेशन प्रमुख रूप से प्रचार-कार्य ही करते हैं, यद्यपि लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए संगीत, कविता, नाटक आदि मनोरंजनात्मक कार्यक्रम भी साथ-साथ चलाये जाते हैं। 'रेडियो सीलोन का व्यापार विभाग' इसका सबसे उत्तम उदाहरण है। छोटे-छोटे कथनों, विशेष अतिथियों की बातों, प्रख्यात अभिनेता, अभिनेत्री या नेताओं के व्याख्यान आदि के द्वारा रेडियो या टेलीविजन प्रचार कार्य में मदद करता है।

(4) सार्वजनिक भाषण (Public Speeches) :- सार्वजनिक भाषण के द्वारा भी प्रचार कार्य किया जा सकता है। यह साधन छोटे समाजों में या धनिष्ठ समूह में विशेष रूप में प्रभावशील होता है। अपनी पार्टी के लिए अथवा चुनाव के दौरान में एक विशेष ~~[illegible]~~ प्रत्याशी के लिए सार्वजनिक सभाओं में भाषण देते हुए हम राजनैतिक नेताओं को प्रचार-कार्य करते देखते हैं। उसी प्रकार फुटपाथ पर दवा बेचने वाले तथाकथित एजेन्ट भी एक स्थान पर खड़े होकर अपने भाषण द्वारा दवा का प्रचार करते हैं। इस साधन का सर्वप्रमुख गुण यह

है कि इसमें प्रचारकर्ता और जनता का सम्पर्क प्रत्यक्ष व आमने-सामने का होता है और इसीलिए इसका प्रभाव भी लोगों पर सीधे तौर पर ही पड़ता है। इसीलिए राजनैतिक दलों के नेतागण, श्रमिक संघों के नेता तथा विद्यार्थी संघ के कार्यकर्तागण प्रचार के इस साधन पर अत्यधिक भरोसा करते हैं।

(5) लाउड-स्पीकर (Loud-Speaker):→ भारतवर्ष में इस साधन का भी अत्यधिक प्रयोग प्रचार के लिए किया जाता है क्योंकि यह प्रचार का एक सस्ता साधन है। किसी रिक्शे, तांगे या मोटर पर लाउड-स्पीकर लगाकर यहाँ प्रचारक को सड़क-सड़क व गली-गली घूम-घूमकर किसी सिनेमा, चुनाव, दवा या अन्य किसी वस्तु का प्रचार करते देखा जा सकता है। इस साधन की सुविधा यह है कि इसमें प्रचारक की आवाज खूब जोर-जोर से निकलती है जिससे प्रथमतः वह आवाज एक साथ अनेक व्यक्तियों को सुनाई देती है और द्वितीयतः तेज आवाज लोगों के ध्यान को स्वतः ही अपनी ओर आकर्षित करती है। इसीलिए सार्वजनिक भाषण में भी इस साधन का उपयोग किया जाता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रचार के अनेक साधन हैं और प्रचारकर्ता अपने साधन तथा सुविधा के अनुसार इन साधनों में से किसी एक को अथवा एक-साथ कई साधनों को काम में लाता है। बहुधा प्रचारक ऐसे साधन या साधनों को चुनता है जो कि उसके स्वार्थों की सिद्धि में अधिकतम सहायक हो सकता है।